सामंतवादी सामाजिक संरचना के अंतर्हीन संघर्ष की रूपक : फूलन देवी

डॉ. कुमारी अंतिमा

सहायक प्राध्यापक (तदर्थ)

सत्यवती महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय,

अशोक विहार, नई दिल्ली

सारांश

फूलन देवी समाज में स्त्री के उस ढांचे को तोड़ती है जिन्हें स्त्री होने मात्र से कमजोर व कमतर आंक लिया जाता है। फूलन देवी अपने साथ हुए अत्याचार का बदला लेती है और प्रशासन के सामने वंचित समाज व स्त्रियों के साथ हो रहे शोषण को चिन्हित करती है। एक लोकतांत्रिक समाज में जहाँ सभी को समान अधिकार दिए गए हैं हाँ बदला लेने जैसी बातें कत्तई ठीक नहीं लगती लेकिन जब एक स्त्री के साथ हुए शोषण में तंत्र चुप्पी साध ले और स्त्री बंदूक उठा ले तो यह भी सोचने वाली बात है। दलित समुदाय की स्त्रियों को यह समाज, समाज में तो ठीक से स्थान देता नहीं है बदले में हिंसा, अत्याचार, बलात्कार व शोषण जैसी त्रासदी से हर रोज रूबरू करवाता है।

बीज-शब्द: बागी फूलन देवी, दलित स्त्री, शोषण, फ़िल्म 'बैडिट क्वीन', ब्राह्मण पितृसत्ता, क्रांतिकारिता।

प्रस्तावना

बुंदेलखंड के उत्तरप्रदेश राज्य के जलोना जिले में फूलन देवी का जन्म हुआ था। मल्लाह समाज में जन्मी फूलन देवी के साथ बचपन से ही शोषण का एक विद्रूप चेहरा देखने को मिलता है। फूलन देवी संघर्ष का दूसरा नाम है। अपने आत्मबल से उन्होंने शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई, स्त्रियाँ कमजोर होती हैं इस बात की फूलन देवी ने जन्म के धजियाँ उड़ाई हैं। रूप, रंग, कद, काठी में सामान्य दिखने वाली फूलन देवी स्त्री समाज में एक बड़ा उदाहरण बनती हैं। मालासेन के उपन्यास 'इंडियाज बैडिट क्वीन: द टू स्टोरी ऑफ फूलन देवी' पर शेखर कपूर ने 'बैडिट क्वीन' फिल्म बनाई। यह फिल्म फूलन देवी के जीवन से हमें परिचित करवाती है। फिल्म फूलन देवी के माध्यम से दलित समाज की स्त्रियों पर किस तरह के शोषण होते हैं इसे बखूबी समझा जा सकता है। फूलन देवी की तरह ही समाज में अन्य दलित महिलाओं को जातिगत आधार पर सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक शोषण के अलावा उन्हें निर्वस्त्र करके पूरे समाज में अपमानित होने की त्रासदी से

गुजरना पड़ता है। फूलन देवी के माध्यम से सामाजिक संरचना में किस तरह की दरारें हैं यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। फूलन देवी वंचित समाज की आवाज़ बनती हुई दिखाई देती हैं लेकिन यह आवाज़ लोगों में एक डर का भाव पैदा करता है और फूलन की आवाज़ को जड़ से उखाड़ दिया जाता है। खैर फूलन एक विचार बनके लोगों में दिखाई देती हैं। फूलन देवी अपने जीते-जी इस संघर्ष में एक दिन संसद तक पहुँचती हैं। फूलन देवी अपनी क्रांतिकारिता से हजारों लाखों मूक लोगों की आवाज़ बनती हैं। फूलन की आवाज़ इस समाज में साहस करने का दुःसाहस करती हैं और यह दुःसाहस ब्राह्मण पितृसत्ता की जड़ें हिला देने की क्षमता रखती हैं। बाबा नागार्जुन की कविता 'फूलन कथा' और सरी 'फूलन देवी' और सुदेश तनवर की कविता 'लोग भूल गए हैं', 'फूलन, तुम मरी नहीं हो!' इस संदर्भ में महत्वपूर्ण रही है।

फूलन पर बात करना या लिखना कहीं- न- कहीं वर्चस्व की संस्कृति को हिला देने जैसा प्रतीत होता है। फूलन के साथ खड़ा होना या उनका समर्थन करना एक

साहस भरा काम है। 'माटी के वारिस'(सुदेश तनवर) काव्य संग्रह में प्रोफेसर चौथीराम यादव लिखते हैं कि, "मुझे नहीं मालूम कि सुदेश तनवर और नागार्जुन के अलावा किसी अन्य दलित या ग़ैर दलित कवि ने पूरी संवेदना के साथ फूलन देवी के बगल में खड़ा होने का दुःसाहस किया हो।"¹ फूलन देवी पर जितना लिखा जाना चाहिये था या स्त्री विमर्श के नज़रिए से जो विश्लेषण होना चाहिए था वह एक सिरे से गायब है, इसके पीछे कहीं न कहीं जातिगत भूमिका रही है। सुदेश तनवर लिखते हैं कि ' अगर होती तुम बामनी/या गाँव की कोई ठकुराईन/.....तुम्हारी बहादुरी के चर्चे /होते गाँव भर /गली-गली / घोषित कर दिया जाता तुम्हें / देवी या फिर चंडी / पूजा जाता / वैष्णव या दुर्गा बना कर।"² यह जाति की अपनी सच्चाई रही है कि एक तरफ़ फूलन जैसे व्यक्तित्व को लोग नज़र अंदाज़ कर देते हैं और दूसरी तरफ़ किसी भी सामान्य स्त्री को कई उपाधियों से नवाज़ के उनकी पूजा करते हैं। एक तरफ़ स्त्री सम्मान पाने की अधिकारी अपने उच्च वर्ण में पैदा होने से रही है वहीं जातिगत आधार पर निर्वस्त्र करके और अपमान, हिंसा की शिकार रही हैं।

शोध-विस्तार

उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड राज्य के जलोना जिले में 10 अगस्त 1963 को फूलन देवी का जन्म हुआ था। मल्लाह माज में जन्मी फूलन देवी के साथ बचपन से ही जिस तरह के शोषण का जिक्र हम सुनते रहे हैं, और फिल्मों, किताबों व चर्चाओं के माध्यम से देखते, पढ़ते, सुनते हुए शोषण के उस भयानक रूप से परिचित होते हैं जो हमारे समाज में विशिष्ट कहे जाने वाले समाज व पुरुषों द्वारा एक स्त्री को दिया जाता है। माला सेन द्वारा रचित उपन्यास 'इण्डियाज़ बैडिट क्वीन: द टू स्टोरी ऑफ़ फूलन देवी' से प्रेरित होकर शेखर कपूर द्वारा ' बैडिट क्वीन ' फिल्म बनायी गयी। इस फिल्म के बनने के बाद आम जनता भी फूलन देवी के शोषण के साथ जुड़ जाती है। फूलन देवी पर बाबा नागार्जुन की एक कविता है जिसमें बाबा लिखते हैं कि, 'फूलन देवी / महिलाओं के मध्य छिपी

हैं / सौ सौ डाके डाले उसने / एक एक की नाक तराशी / एक एक की कुतर गयी है कान / दसियों की तो आँख फोड़ी / बदल बदलकर घोड़े उड़ाती / जिला बदलती ही रहती / फूलन देवी दुर्गा माता की बेटी /.....सिंहवाहिनी प्रकट हुई हैं / मैंनपुरी के एक गाँव में / ।"³ बाबा नागार्जुन ने जिस तरह का चित्र फूलन देवी के लिए खींचते हैं उसे पढ़कर ऐसा लगता है कि फूलन देवी वास्तव में अराजक तत्वों का सर्वनाश करने वाली कोई देवी दुर्गा हैं। इसी संदर्भ में प्रोफेसर चौथी राम यादव लिखते हैं कि, 'नागार्जुन ने इस कविता में फूलन देवी को छापामार लड़ाई लड़ने वाली एक वीरांगना के रूप में चित्रित कर, सवर्ण समाज द्वारा दुष्प्रचारित डाकू , लुटेरी और हत्यारिन कहे जाने का विखंडन किया है। यह कविता १९८० में लिखी गयी थी और उसके १६ साल बाद १९९६ में एक और कविता 'फूलन कथा ' लिखी जो उसके डाकू से इंसान बनने की कहानी भी है और सड़क से संसद तक उसकी यात्रा कथा भी। नागार्जुन की कविता के जनतंत्र में तानाशाह इंदिरागांधी खलनायिका हैं, तो फूलन देवी को नायिका का सम्मान दिया गया है। .स्वानुभूति और सहानुभूति का विमर्श अनुभूति के संदर्भ में विचारणीय हो सकता है, लेकिन जब किसी दलित कवि की जातीय नायिका किसी ग़ैर दलित कवि की जातीय नायिका बन जाये , तो यह अंतर बेईमानी हो जाता है।"⁴ फूलन देवी एक डाकू हैं ? फूलन देवी ने हत्याएं की हैं इस लिए वो दोषी हैं? फूलन देवी के साथ हुए अत्याचार को अगर नज़रअंदाज़ कर दिया जाये तो शायद यह मान लेने में किसी को परहेज नहीं होगा, लेकिन पूरे प्रसंग को जानने-समझने वाला व्यक्ति अपने व्यक्तित्व में जाति, धर्म से मुक्त है तो वह फूलन देवी पर लगे इन आरोपों को महत्व नहीं देगा। शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाने के लिए कई बार यह अपराध करना जैसे सही और गलत से परे लगता है, क्योंकि ये सब फूलन ने अपने साथ हुए बलात्कार और अपने बचाव या ये कहें की अपने जैसों के बचाव के लिए ये हत्याएं करती हैं। लेकिन क्या सच में उन्हें डाकू कहा जाना उचित है? इस सन्दर्भ में जितेन्द्र

विसारिया लिखते हैं कि, “एक सामान्य दलित पिछड़ी युवती से बागी बनी फूलन देवी (मैं उन्हें जानबूझकर दस्यु या डाकू नहीं कह रहा, क्योंकि शोषण और अपमान के खिलाफ बन्दूक लेकर बीहड़ में कूद जाने वाले व्यक्ति को, हमारे चंबल में डाकू नहीं बागी कहा जाता है।”⁵ कोई व्यक्ति डाकू या बागी यूँ ही नहीं बन जाता है, उसके बागी बनने के पीछे कई कारण मौजूद रहते हैं खास कर जब किसी महिला बागी की बात आती है तो सोचने की बात है।

बागी फूलन देवी के शोषण की गाथा उनके घर, परिवार, समाज से शुरू होती है। जैसा की पूरे विश्व में पितृसत्ता का वर्चस्व इस प्रकार का रहा है की स्त्रियाँ दोयम दर्जे की मान ली गयीं और प्रथम स्थान व उच्च स्थान पर मान लिए गए पुरुषों ने स्त्रियों को निरीह, कमज़ोर और एक निष्क्रिय प्राणी मान लेने की साजिश करते रहे। मात्र ग्यारह साल की उम्र में फूलन की शादी काफी उम्रदराज व्यक्ति पुत्तिलाल से कर दी जाती है। शादी के बाद फूलन को पुत्तिलाल की पत्नी के रूप में देखने वाला परिवार, समाज फूलन की उम्र भूल जाता है। एक ग्यारह साल की छोटी बच्ची जिसने अपने आपको जाना नहीं उसे शादी के धर्म और कर्मकाण्ड को निभाने के लिए जबरदस्ती मजबूर कर दिया जाता है। अंततः पुत्तिलाल से तंग आकर फूलन अपने घर चली आती है। फूलन के व्यक्तित्व का सबसे खास पहलू यह देखने को मिलता है कि वो लगातार किसी भी शोषण का बस विरोध नहीं करती वह तब तक लड़ती है जब तक उसे एक सही अंजाम न दे दे।

ससुराल से लौटी हुई लड़कियों, पति द्वारा छोड़ दी गयी लड़कियों, अपने लिए स्पेस ढूँढती लड़कियों से हमारा समाज कैसा व्यवहार करता है इससे हम भली-भांति परिचित हैं। फूलन के साथ भी यह समाज कुछ वैसे ही पेश आता है या यह कह सकते हैं कि थोड़ा ज्यादा ही कठोर रुख अपनाता है “दलित महिलाओं की त्रासदी यह है कि उन्हें एक गाल पर ब्राह्मणवाद का तो दूसरे गाल पितृसत्ता का थप्पड़ खाना पड़ता है।”⁶ ठाकुरों से भरे-पूरे गाँव में भला एक दलित युवा लड़की कब सुरक्षित रही है।

गांव में फूलन पर मुखिया का बेटा बलात्कार करने की कोशिश करता है लेकिन फूलन बच निकलती है। यह शिकायत जब ग्राम पंचायत तक पहुँचती है तो फूलन को ही दोषी ठहराया जाता है। सत्ता और वर्ग संघर्ष के बीच जूझती ये दलित महिलाएँ न्याय मिलने की आस जैसे खो चुकी हैं। दलित समाज की स्त्रियों के लिए यह एक विडम्बनापूर्ण स्थिति रही है। कुसुम मेघवाल लिखती हैं कि, “ इसे विडम्बनापूर्ण ही कहा जाएगा कि एक ओर तथाकथित सवर्ण समाज की स्त्रियों में परपुरुष का ध्यान रखना भी पाप और धर्म विरोधी समझा जाता है, वहीं दलित नारी को सर्वस्व लूटा देने पर मजबूर किया जाता था।”⁷

दलित महिलाओं के सन्दर्भ में समाज का कैसा व्यवहार रहा है इस बात से कौन परिचित नहीं होगा। भारतीय समाज पितृसत्ता का गुलाम रहा है। सत्ता का सम्बन्ध पितृसत्ता से क्यों और कैसे रहा है इस बात से भी हम परिचित हैं। खैर यह विषय हम समाजविज्ञान के लिए छोड़ देते हैं। ऐसी तमाम बातों का संबंध भारतीय समाज की स्त्रियों से जुड़ा हुआ है इसे नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। महिलाओं के शोषण का यह रूप भारतीय समाज में ही नहीं बल्कि विश्व के समाज व साहित्य में भी देखने को मिलता है। फूलन देवी ऐसे ही शोषण के विरुद्ध बंदूक उठाती हैं और दलित महिलाओं के संघर्षशील इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ देती हैं। फूलन देवी विश्व इतिहास में शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने वाली एक बागी चरित्र की छाप छोड़ जाती हैं। फूलन देवी जिस तरह से अपनी ताकत को समझते हुए उसका इस्तेमाल करती हैं जिससे यह बात तो स्पष्ट होती है कि महिलाएँ अपनी क्षमता में किसी भी पुरुष से कम शक्तिशाली नहीं हैं।

बैंडिट क्वीन के नाम से जानी जाने वाली फूलन देवी महिलाओं के लिए एक पाठ है। फूलन देवी को जिन सामाजिक शोषण व पितृसत्तात्मक समाज से होकर गुजरना पड़ता है यह दुःखी करने वाला, लेकिन हिम्मत न हारने वाला प्रसंग है। दलित महिलाओं के समक्ष इस बड़े समाज ने शुरू से मात्र दो विकल्प छोड़ रखे हैं - (1) आप उच्चवर्गीय समाज के द्वारा पूरी तरह से शोषित होती रहें। ऐसे शोषण में बलात्कार, हिंसा, अत्याचार, मनोरंजन की

दृष्टि से उन्हें निर्वस्त्र करके गाँव समाज में घुमाना। (2) विकल्प कि इन शोषण के विरुद्ध आवाज उठाना, स्वयं मर जाना या मार देना जैसे चंबल की बागी फूलन देवी या खैरलांजी की सुरेखा भोतमांगे। इस तरह से सदियों से दलित महिलाओं के साथ अत्याचार व शोषण की घटनाएँ बहुत ही आम घटनाएँ हैं।

फूलन देवी अपने साक्षात्कार में कहती हैं कि, “मैंने कई बार सोचा कि आत्महत्या कर लूँ, पर मरती तो हजारों लड़कियाँ रोज हैं। जिस रावण ने एक औरत को उठाया, उसका पुतला आज भी लोग फूंकते हैं, मेरे साथ भी ऐसे कई रावणों ने अत्याचार किया, मैंने उनका जवाब दिया”।⁸ फूलन देवी के द्वारा कही गयी इन बातों की कई सन्दर्भों में अलग-अलग व्याख्या की जा सकती है। फूलन देवी कोई पढ़ी लिखी महिला नहीं थीं कि बड़ी- बड़ी बातें करके लोगों का ध्यान आकर्षित करती. उन्हें समझने जानने के लिए बड़ी सूक्ष्म, बारीक सोच, समझ की जरूरत है।

सुधा अरोड़ा अपनी किताब “आम औरत जिंदा सवाल” में फूलन देवी पर बनी फिल्म ‘बैडिंट क्वीन’ पर लिखती हैं कि मुंबई के जिस महिला संगठन ‘अग्निशिखा मंच’ ने इस फिल्म के प्रति अपना विरोध मोर्चे द्वारा दर्ज किया है, उस मंच की अध्यक्षा ने इस दृश्य की शिकायत करते हुए कहा ‘ यह गन्दा दृश्य है, इसे घर पर अपने लोगों के साथ कैसे देखा जा सकता है? इसमें मूवमेंट दिखाए गए हैं। क्या यही कला है? अखिर फूलन है क्या? उसने समाज को क्या सिखाया? यही कि डकैत बन जाओ। इसके अलावा फूलन ने हमें दिया ही क्या है? समाज सुधार पर ही फिल्म बननी थी, तो किरण बेदी पर फिल्म बनाते, जिसने इतने जेल सुधार किए हैं।”⁹ अपने संस्कारी मानसिकता में सब कुछ अच्छा-अच्छा देखने वाला भारतीय यूटोपियन समाज फूलन से क्या सीखेगा? फूलन देवी से सीखने के लिये हकीकत की जमीन और फौलाद जैसा जिगर चाहिये नहीं तो सती प्रथा के बदले रूप में इज्जत लूट जाने के बाद मुँह छुपाके रहने और मर जाने

वाले लोगों की कमी इस देश में नहीं है। यह वही भारतीय समाज है जहाँ महिलाओं के संदर्भ में यह महान श्लोक प्रचलित है कि-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

रमन्ते यत्र तु एताः न पूज्यन्ते तत्र सर्वा क्रियाः अफलाः भवन्ति

फूलन देवी एक डाकू है, उनसे कोई क्या सीखेगा कहने वाला समाज ही कहाँ सीख पाता है अपने ‘ मनुस्मृति ’ की इन पंक्तियों से कि जहाँ नारी का सम्मान होता है वहाँ देवता वास करते हैं। फूलन देवी किसी भी सामान्य स्त्री की तरह एक स्त्री थीं, ऐसी कौन-सी परिस्थितियाँ होंगी कि उन्हें डाकू बनने के लिये मजबूर किया गया होगा। फूलन जैसी महिलाओं को अपने न्याय के लिये खुद राम बनना पड़ता है, उनके लिये राम अवतार नहीं लेते।

‘बैडिंट क्वीन’ फिल्म पर आरोप प्रत्यारोप के दौरान सुधा अरोड़ा लिखती हैं कि “हमारा उच्चवर्णीय मन उसे सहानुभूति देने से इंकार करता है। फूलन डकैत रही हैं, वह हमारी सहानुभूति की पात्र कैसे हो सकती हैं? हम उसकी बाद की जिंदगी जानते और उसे मानसिक रूप से इस दृश्य पर इंपोज करते हैं और संवेदनहीन हो जाते हैं। हम उसकी बाद की जिंदगी के कारण तटस्थ होकर यह दृश्य नहीं देख पाते हैं। हमें लगता है कि यह बलात्कार एक डकैत औरत पर होता हुआ दिखाया जा रहा है। हम भूल जाते हैं कि उस समय वह डकैत नहीं थी। वह गाँव की उन हज़ारों मासूम औरतों जैसी ही थी जिन्हें ऊँची जाति के लोग हमेशा अपने हाथों का खिलौना समझते रहे हैं।”¹⁰ फूलन किसी भी सामान्य स्त्री की तरह स्त्री थी, वो प्रेम करना जानती थी, वो अपने माता-पिता, भाई-बहनों के लिये चिंतित होना जानती थी। बलात्कार जैसी दुर्भावना का विरोध करना जानती थी। फूलन आम महिलाओं की तरह ही देवी दुर्गा की उपासना करना जानती थी, लेकिन उसे इन सबके बदले सामान्य महिलाओं जैसी जिंदगी कहाँ मिलती है। विक्रम मल्लाह के बारे में खुशवंत सिंह बताते हैं, कि “उनके लंबे बाल थे, और फूलन को बेहद प्यार

करते थे, फूलन को फिल्मी गानों का बड़ा शौक था, और इसलिये विक्रम ने उन्हें रेडियो कैसेट और रिकॉर्डर ला दिया था। फूलन ने विक्रम के प्यार में खबर स्टैम्प बनवाया था।¹¹ एक सामान्य स्त्री के लक्षण इससे बढ़कर क्या हो सकते हैं कि वह प्रेम करना जानती है। प्रेम में पड़ी फूलन वो सारे टोटके करती है जो कोई भी सहृदयी व्यक्ति करता है। फूलन देवी को एक डाकू के रूप में देखने वाला समाज अपने आप में दोषी है। फूलन की भाषा और तेवर के बदल जाने का दोषी किसे ठहराया जाए ? 'मैंने कई बार सोचा आत्महत्या कर लूँ--- पर मरती तो हज़ारों लड़कियाँ हैं ' कहने वाली फूलन देवी जब यह सोचने लगे कि "गाँव के पुराने गाने में प्रचलित था कि अगर मारना है तो बीस मारो, एक नहीं बीस मारोगी तो नाम होगा, एक मारने पर गुनहगार हत्यारा कहलाई जाओगी।"¹²

ऐसी बातों को सोचने वाला मन कभी फूलों सा खिलता और मुस्कुराता रहा होगा लेकिन परिस्थितियों ने इतनी क्रूर बातें सोचने के लिये मज़बूर किया होगा। विक्रम मल्लाह की मौत के बाद फूलन पर दोबारा यातनाओं का लंबा सिलसिला शुरू होता है। पुलिस हिरासत में उस पर शारीरिक अत्याचार किये जाते हैं। ठाकुरों द्वारा ही फूलन को जेल से छुड़ाया जाता है। इसके बाद लगातार कई दिनों तक बेहमई के एक गाँव में ठाकुरों के सामूहिक बलात्कार की शिकार होती है।

ध्यान देने वाली बात है कि किस समाज की महिलाओं को नग्न करके पूरे समाज में घुमाया जाता है, सामूहिक बलात्कार किया जाता है। प्रशासन इन महिलाओं के साथ इनकी रक्षा के लिये कितना ज़िम्मेदार है। अपने कर्तव्यों से विमुख पुलिस प्रशासन भी इन्हें नज़रअंदाज करता है, उनके साथ दुष्कर्म करता है। फूलन को रिहा किया जाता है ताकि उसके साथ उसकी बची खुची अस्मिता को भी नग्न करके तार-तार किया जा सके। फूलन स्त्री समाज की एक ऐसी स्मृति है जिसे याद करके इस समाज में अपनी स्थिति आँक लेने की ज़रूरत है। दलित महिलाएँ क्या इस समाज में मात्र योनि हैं या कोई स्थान या अस्तित्व भी रखती हैं।

फूलन हममें से बहुत अलग, साहस से भरी हुई अपने साथ हुए बलात्कार का बदला लेना जानती थीं। वो

स्त्री के उस प्रेम को तोड़ती हैं जिसमें महिलाओं को कोमलांगी समझा जाता है। माथे पर लाल चोला बांधे अपने हाथों में बन्दूक को उठाए जब अपना बदला लेने के लिये लौटती हैं तब किसी ने सोचा नहीं होगा कि यह भी हो सकता है। "बेहमई से भागने के कई महीनों बाद, फूलन बदला लेने के लिये गाँव लौटी। 14 फरवरी, 1981 की शाम को उस समय जब गाँव में एक शादी चल रही थी, फूलन और उसके गिरोह ने पुलिस अधिकारियों के रूप में-----बेहमई गाँव पहुँचते हैं जहाँ ठाकुर श्रीराम सिंह शादी में पहुँचा हुआ था। फूलन और मान सिंह अपनी पूरी गैंग के साथ बेहमई गाँव पर हमला करते हैं, लेकिन ठाकुर श्रीराम सिंह वहाँ से बच निकलता है। प्रतिशोध की आग में जलती फूलन गाँव के ठाकुरों को एक स्थान पर खड़ा कर उनसे श्रीराम सिंह को पूछती है किंतु वो उसका कोई सुराख नहीं देते। फूलन पूर्व में अपने ऊपर हुए जघन्य कृत्य के समय उपस्थित और सहयोगी रहे उन ठाकुरों को एक कतार में खड़ा करके गोलियों से भून देती है।"¹³

यह बातें सुनकर बुरा लगता है या होगा, कि फूलन देवी ने इतने लोगों को गोलियों से भून दिया लेकिन यह वही समाज है जो किसी सामान्य लड़की के साथ हुए बलात्कार पर बलात्कारी की हत्या के बारे में अपनी राय खुलकर देता है। फूलन देवी के साथ हुए अत्याचार के आगे यह गलत है या सही हम ठीक-ठीक तय नहीं कर पाते हैं। कानून की स्थिति जब दलित स्त्रियों को न्याय दिलाने में सक्षम नहीं है, या यह कह लें कि कानून भी किसी खास वर्ग की हिमायत करने वाला है तब फूलन देवी द्वारा किया गया यह कार्य कितना गलत है?

फूलन देवी का नाम बागियों में बहुत चर्चित हो गया था। सरकारें व पुलिस प्रशासन फूलन को पकड़ने में लगातार नाकाम रहीं। कई बार फूलन को पकड़ने की जुगत में खाली हाथों लौटना पड़ा है। प्रशासन को घुटने पर लाने वाली फूलन देवी ने अपनी शर्तों पर अपने साथियों के साथ सरकार के आगे समर्पण किया, वो शर्तें कुछ इस प्रकार से थीं-

1. किसी को भी फाँसी न हो।
2. मध्य प्रदेश में सरेंडर हो
3. आठ साल से ज़्यादा सजा न हो

4. अच्छे जेल में रखा जाए
5. स्पेशल कोर्ट में सुनवाई हो
6. चचेरे भाई मयुदीन ने जो ज़मीन हथियाई है वो उनके पिताजी को वापस मिले
7. भाई को सरकारी नौकरी मिले
8. परिवार को मध्य प्रदेश में सरकारी ज़मीन पर बसाया जाए और
9. साथ में उनकी गाय और बकरी को भी।”¹⁴

इन शर्तों के माने जाने के करार पर फूलन देवी अपने साथियों संग मध्य प्रदेश में समर्पण करती हैं। इस प्रकार से शोषितों, वंचितों की रोबिनहुड कही जाने वाली फूलन देवी आज भी अपने संघर्ष के लिये जानी और याद की जाती हैं। पांच फ़िट की साधारण सी दिखने वाली महिला को देखकर लोग इस बात का अंदाज़ा नहीं लगा पा रहे थे कि यह डाकू और न जाने कितने लोगों की हत्या की आरोपी रही है। “जातिवादी मीडिया, जिसका पैमाना खूबसूरती और न्याय का अलग था, उनके गले के नीचे यह बात उतर नहीं रही थी, कि जिस औरत को वो दस्यु सुन्दरी, खतरनाक और रोबिन हुड बता रहे थे, उनके लिये पाँच फीट की, चपटी नाक वाली, नेपाली जैसे दिखने वाली होगी।”¹⁵ फूलन देवी ने सदियों से बनी बनायी स्त्री जाति की छवि जिसमें स्त्रियों को सुंदर आकर्षक और पुरुषों के हाँ में हाँ मिलाने वाली छवि को तोड़ती हैं। दस्यु सुन्दरी के नाम से जानी जाने वाली फूलन देवी सौंदर्य का एक नया पैमाना बनाती हैं।

निष्कर्ष

फूलन देवी को साक्षात देखने वाले हैरान थे कि जिस महिला को ठीक से बोलने नहीं आता है और लोगों की भीड़ में स्वयं को डरा हुआ पाती है उस फूलन ने लोगों के होश उड़ा दिये थे। वस्तुतः फूलन देवी का जीवन पितृसत्ता के विरुद्ध एक स्त्री की विद्रोह चेतना और शक्ति का सशक्त उदाहरण है। कोई स्त्री कमज़ोर नहीं होती न तो ज्ञान में न तो इस समाज को समझने में, लेकिन पुरुषवादी मानसिकता ने स्त्री को मात्र भोग्या समझा। दलित स्त्रियों की हालत सामान्य स्त्रियों से बहुत ज्यादा बदतर रही है क्योंकि उन्हें समाज ने दोहरा शोषण दिया है एक स्त्री होने के नाते और दूसरा दलित होने के की वजह से। फूलन देवी समाज में जिस तरह के शोषण महसूस करती हैं और उसके विरुद्ध अंततः हथियार उठाती हैं वैसा शोषण किसी

समाज परिवार की महिलाओं को नहीं महसूस करना पड़ता है। संघर्ष की इस लड़ाई में फूलन देवी को गोलियों से छलनी कर दिया जाता है ताकि यह शोषणकारी विरासत बनी रहे। इस संदर्भ में सुदेश तनवर की यह कविता बेहद प्रासंगिक है - ‘फूलन तुम मरी नहीं हो / फूलन ! / तुम्हें इसलिए नहीं मारा गया / प्रतिशोध लिया था तुमने / अपने साथ हुए / अमानवीय / अत्याचार के खिलाफ़ / नहीं / तुम्हें इसलिए मार दिया गया / चुनौती दी थी तुमने / बामनवादी अहम को / बंदूक की नोक पर”¹⁶

सन्दर्भ सूची

1. सुदेश कुमार ‘तनवर’, ‘माटी के वारिस’ काव्य संग्रह, रश्मि प्रकाशन, लखनऊ, 2020 पृ.सं. 16
2. सुदेश कुमार ‘तनवर’, फूलन, तुम मरी नहीं हो! ‘घर वापसी’ काव्य संग्रह, समता साहित्य प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2012 पृ.सं. 6
3. ‘नागार्जुन रचनावली’, राजकमल प्रकाशक नई दिल्ली, पहला संस्करण, 2003 पृ.सं. 237-238
4. सुदेश कुमार ‘तनवर’, ‘माटी के वारिस’ काव्य संग्रह, रश्मि प्रकाशन लखनऊ 2020 पृ.सं. 17
5. जितेन्द्र विसारिया, हिन्दी सिनेमा और दलित चेतना, जनपक्ष, 5 मई 2013 http://jantakapaksh.blogspot.com/2013/05/blog-post_5.html
6. मोहनदास नैमिशराय, दलित नारी: एक विमर्श, दलित नारी: कल आज और कल एक विवेचन, पृ. सं. 163
7. कुसुम मेघवाल, दलित नारी: एक विमर्श, दलित नारी: कल आज और कल एक विवेचन, पृ.सं. 24
8. अभिषेक कुमार तिवारी, द सभा, सितम्बर 2020, पृ.सं. 4, अंक 1 साल 6, hindi.thesabha.org
9. सुधा अरोड़ा, आम औरत जिन्दा सवाल, सामयिक प्रकाशन, 2009 पृ.सं. 203
10. वही
11. द सभा, सितम्बर 2020, पृ.सं. 1
12. वही, पृ.सं. 1
13. जितेन्द्र विसारिया, हिन्दी सिनेमा और दलित चेतना, जनपक्ष, 5 मई 2013 http://jantakapaksh.blogspot.com/2013/05/blog-post_5.html
14. द सभा, पृ.सं. 1
15. वही
16. सुदेश कुमार ‘तनवर’, फूलन, तुम मरी नहीं हो! ‘घर वापसी’ काव्य संग्रह, समता साहित्य प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2012 पृ.सं. 6